इस्लाम की दावत

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

इस्लाम की दावत

उम्मत-ए-मुस्लिमा की ज़िम्मेदारी

क़ुरआन की सूरह अल-बक़रह में उम्मत-ए-मुहम्मदी को उम्मत-ए-वसत (2:143) कहा गया है यानी बीच की उम्मत (middle community)। इसका मतलब यह है कि उम्मत-ए-मुहम्मदी रसूल और आम इंसानों के बीच है। उसे रसूल से जो ख़ुदाई हिदायत मिली है, उसे नस्ल-दर-नस्ल तमाम इंसानों तक पहुँचाना है। क़ुरआन की इस आयत में वसत का लफ़्ज़ इस्तेमाली मायने में नहीं है, बल्कि वह अपने असल मायने में है यानी बीच की उम्मत के मायने में। इस आयत में उम्मत-ए-वसत का लफ़्ज़ उम्मत के मिशन या उसकी दाओयाना ज़िम्मेदारी को बता रहा है, वह हरगिज़ किसी क़िस्म की पुरअसरार फ़ज़ीलत का नाम नहीं।

क़ुरआन की इस आयत में उम्मत-ए-मुहम्मदी की फ़ज़ीलत को बयान नहीं किया गया है, बल्कि इसमें

उम्मत की ख़ारिजी ज़िम्मेदारी को बयान किया गया है। वह ख़ारिजी ज़िम्मेदारी यह है कि उम्मत अल्लाह के नक़्शा-ए-तख़्लीक़ (Creation Plan of God) से लोगों को बाख़बर करे। वह हर ज़माने और हर नस्ल में इस दावती काम को जारी रखे। यह दावती मिशन ही वह मिशन है, जिसकी अदायगी पर उम्मत-ए-मुहम्मदी का उम्मत-ए-मुहम्मदी होना साबित होता है।

इस मामले में उम्मत के लिए दावती अमल के तीन दर्जे हैं। उम्मत के हर आदमी को अपनी सलाहियत के ऐतबार से इनमें से किसी दर्जे में अपने दाओ होने की हैसियत को साबितशुदा बनाना है। जो लोग इस अमल में शामिल न हों, उनके दूसरे आमाल ख़ुदा की नज़र में बेक़ीमत हो जाएँगे। इस मामले में ख़ुदा का जो मेयार है, वह पैग़ंबर और पैग़ंबर की उम्मत, दोनों के लिए बराबर है।

इस मामले का पहला दर्जा वह है, जिसे शरीयत में नीयत कहा जाता है यानी नीयत के ऐतबार से दावत के अमल में शामिल होना। लेकिन यह नीयत अल्फ़ाज़ को दोहराने का नाम नहीं, यह दिल की गहराइयों के साथ

तड़पने का नाम है। हर मोमिन के लिए ज़रूरी है कि वह दूसरी क़ौमों की हिदायत का दिल से चाहने वाला हो। वह उनकी गुमराहियों को देखकर बेचैन हो जाए। वह अपनी तनहाइयों में उनकी हिदायत के लिए दुआ करे। यह जज़्बा इतना ज़्यादा हो कि इस पर सोचते हुए उसकी आँखों से आँसू उबल पड़ें।

दूसरा दर्जा यह है कि अहले-ईमान शिद्दत के साथ इसका एहतमाम करें कि उनकी शख़्सियत किसी भी ऐतबार से दावत के रास्ते में रुकावट न बने। वे कोई भी ऐसा अमल न करें, जो लोगों के दिलों में इस्लाम के ख़िलाफ़ नफ़रत और बेज़ारी पैदा करे। वे ऐसे हर अमल से परहेज़ करें, जो दाअी और मदऊ के बीच नाराज़गी पैदा करने वाला हो। वे हर हाल में इसका एहतमाम करें, चाहे इसके लिए उन्हें क़ौमी या इक़्तिसादी या सियासी नुक़सान ही क्यों न उठाना पड़े।

तीसरी चीज़ बराहे-रास्त दावत है यानी ख़ुदा के बंदों को दीन-ए-हक़ की तरफ़ बुलाना।

दावत और तब्लीग़ को क़ुरआन में दावत इलल्लाह

कहा गया है यानी अल्लाह की तरफ़ बुलाना, इंसान को उसके ख़ालिक़ और मालिक के साथ जोड़ना। अल्लाह की तरफ़ बुलाने का मतलब यह है कि अल्लाह के बंदों को यह बताया जाए कि अल्लाह की ज़मीन पर तुम्हारे लिए ज़िंदगी का सही तरीक़ा सिर्फ़ यह है कि तुम अल्लाह के बंदे बनकर रहो।

इंसान के लिए दुनिया की ज़िंदगी में सिर्फ़ दो रवैय्ये मुमकिन हैं। एक ख़ुदरुख़ी और दूसरा ख़ुदारुख़ी। ख़ुदरुख़ी ज़िंदगी (self-oriented life) में घमंड, हसद और अनानियत जैसे जज़्बात जागते हैं। इंसान यह समझने लगता है कि हक़ वह है, जिसे वह हक़ समझे और बातिल वह है, जिसे वह बातिल क़रार दे।

ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी (God-oriented life) का मामला इसके बिल्कुल उलट है। ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी आदमी के अंदर बंदगी, तवाज़ो, एतराफ़ और ख़ुद-एहतेसाबी (self-introspection) जैसे जज़्बात उभारती है। पहली सूरत में इंसान अगर ख़ुदपरस्त बन जाता है तो दूसरी सूरत में ख़ुदापरस्त।

दावत इलल्लाह यह है कि इंसान को ख़ुदरुख़ी ज़िंदगी के बुरे अंजाम से आगाह किया जाए और उसे ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी इख़्तियार करने की दावत दी जाए। इन दोनों क़िस्म की ज़िंदगियों को जानने का क़ाबिल ए एतबार और क़ाबिल ए ऐतमाद स्रोत ख़ुदाई तालीमात हैं, जो क़ुरआन और सुन्नत की सूरत में महफ़ूज़ तौर पर हमारे पास मौजूद हैं।

दावत इलल्लाह का काम एक ख़ालिस उख़रवी नोइयत का काम है। क़ौमी मआशी या सियासी मामलों से बराहे-रास्त इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। यह इंसान को ख़ुदा और आख़िरत की तरफ़ बुलाने की एक मुहिम है। दावत इलल्लाह का काम अपनी हक़ीक़त के ऐतबार से एक ख़ालिस ख़ुदाई काम है। ज़रूरी है कि इसी जज़्बे के साथ इसे अंजाम दिया जाए। इस जज़्बे के बग़ैर जो काम किया जाए, वह दावत इलल्लाह का काम न होगा, चाहे उसे दावत-ए-इलल्लाह के नाम पर जारी किया गया हो।

दावत-ए- इलल्लाह न सियासत की तरफ़ बुलाने का काम है और न क़ौमी मसाइल की तरफ़ बुलाना उसका

निशाना है। यह मुकम्मल तौर पर ख़ुदा की तरफ़ बुलाने का एक काम है और इसी ख़ास सूरत में उसे अदा किया जाना चाहिए।

ख़ुदा की तरफ़ बुलाने से क्या मुराद है? इसका मक़सद यह है कि इंसान को ख़ुदा के तख़्लीक़ी मंसूबे (creation plan of God) से आगाह किया जाए। उसे बताया जाए कि ख़ुदा के साथ उसका क्या ताल्लुक़ है और ख़ुदा आइंदा उसके साथ क्या मामला करने वाला है। यह गोया इंसान की ख़ुदा से पहचान कराने का एक काम है। दावत का निशाना यह है कि ख़ुदा के बारे में इंसान की ग़फ़लत टूटे और वह अपनी बंदगी का एहसास करके ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए। इस दावती अमल का निशाना यह है कि इंसान ख़ुदा को पहचाने। वह ख़ुदा की क़ुदरत के मुक़ाबले में अपनी लाचारी को दरयाफ़्त करे। ग़ैब का पर्दा फाड़े जाने से पहले वह ख़ुदा का मुशाहिदा करे। ख़ुदा से बराहे-रास्त साबिक़ा पेश आने से पहले वह बिल वास्ता तौर पर ख़ुदा की मारिफ़त हासिल करे।

दावत का मक़सद इंसान के अंदर सोई हुई रूह को

जगाना है। यह भटके हुए इंसान को ख़ुदा की तरफ़ जाने वाले सीधे रास्ते पर खड़ा करना है। दावत का मक़सद यह है कि इंसान के अंदर उस बसीरत को जगाया जाए, जो कायनात की निशानियों में ख़ुदा के जलवों को देखने लगे, जो मख़्लूक़ात के आईने में उसके ख़ालिक़ को बिला हिजाब पा ले। दावत एक इंसान को इस क़ाबिल बनाने का नाम है कि वह बराहे-रास्त अपने रब से जुड़ जाए। उसे रूहानी सतह पर ख़ुदा का फ़ैज़ान (divine inspiration) पहुँचने लगे। उसके दिलो-दिमाग़ ख़ुदा के नूर से मुनव्वर हो जाएँ। उसका पूरा वजूद ख़ुदा की रहमत की बारिश में नहा उठे।

दावत का निशाना यह है कि आदमी दुनिया में रहते हुए आख़िरत की मख़्लूक़ बन जाए, वह दुनिया की अज़मतों में ख़ुदा की अज़मत को दरयाफ़्त करे, वह दुनिया की नेमतों में जन्नत की नेमत का तजुर्बा करने लगे। दुनिया की तकलीफ़ें उसे जहन्नम की तकलीफ़ की याद दिलाएँ। दुनिया के मनाज़िर उसे आख़िरत की हक़ीक़तों का मुशाहिदा कराने लगें— यही दावत का

निशाना है और ऐसे ही इंसानों को वजूद में लाना दावत और दाअी की कामयाबी है।

क़ुरआन में बताया गया है कि अल्लाह ने इंसान को 'अह्सने-तक़्वीम' की सूरत में पैदा किया, फिर उसे गिराकर 'अस्फ़ला-साफ़िलीन' में डाल दिया (95:4-6)। दावती अमल का मक़सद इंसान को दोबारा उसकी असल इब्तिदाई हालत की तरफ़ लौटाना है, जन्नत से निकाले जाने के बाद दोबारा उसे जन्नत के रास्ते पर डालना है, ख़ुदा की रहमत से दूर होने वालों को दोबारा ख़ुदा की रहमत के साये में पहुँचा देना है।

इंसान की मिसाल ऐसी है, जैसे पानी की एक मछली, जिसे पानी से निकालकर सहरा में डाल दिया जाए। ऐसी मछली सहरा में मुसलसल तड़प रही होगी और उसके साथ बेहतरीन हमदर्दी यह होगी कि उसे दोबारा पानी की तरफ़ लौटा दिया जाए। इंसान भी इसी तरह जन्नत की एक मख़्लूक़ है। उसके अंदर एक नामालूम आइडियल को पाने का जज़्बा बेपनाह हद तक पाया जाता है। हर आदमी अपने इस नामालूम आइडियल के पीछे दौड़ रहा है। वह

बार-बार दुनियावी रौनक वाली किसी चीज़ की तरफ़ लपकता है, इस उम्मीद में कि वह जिस आइडियल की तलाश में है, वह शायद यही है, मगर हर बार उसे नाकामी मिलती है, यहाँ तक कि वह मर जाता है, बग़ैर इसके की उसने अपने आइडियल को पाया हो।

यही वह मुक़ाम है, जहाँ दाअी को अपना दावती अमल अंजाम देना है। दाअी का काम यह है कि वह इंसान को बताए कि वह जिस आइडियल की तलाश में है, वह सिर्फ़ ख़ुदा और उसकी जन्नत है। यह सिर्फ़ ख़ुदा है, जिसे पाकर आदमी अपने आइडियल (ideal) को पाएगा। यह सिर्फ़ जन्नत है, जहाँ पहुँचकर आदमी इस इत्मीनान से दो-चार होगा कि वह जिस दुनिया की तलाश में था, वह दुनिया उसे हासिल हो गई।

इस ऐतबार से हर इंसान दाअी का निशाना है। दाअी को हर आदमी तक पहुँचना है। उसे हर आँख पर पड़े हुए पर्दे को हटाना है। गोया दुनिया में सात बिलियन इंसान हैं तो दाअी को सात बिलियन काम करना है। उसे सात बिलियन रूहों को उनके ख़ुदा से मिलाना है। उसे सात

बिलियन इंसानों को उनकी जन्नती क़यामगाह तक पहुँचाने की कोशिश करना है।

दाअी वह है, जो ज़िंदगी के रास्तों पर रोशनी का मीनार बनकर खड़ा हो जाए, जो इंसानियत के भटके हुए क़ाफ़िलों के लिए ख़ुदाई रहनुमा बन जाए। क़ुरआन की सूरह अज़-ज़ारियात में पैग़ंबर की ज़बान से कहा गया है— "ऐ लोगो ! अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला आगाह करने वाला हूँ (51:50)।" इसी बात को दूसरी जगह क़ुरआन में इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है— "ऐ लोगो ! अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत से बचो (16:36)।"

इस दुनिया में इंसान दो पुकारों के दरमयान है। एक ख़ुदा की पुकार और दूसरी ताग़ूत (शैतान) की पुकार। ख़ुदा ख़ैर का सरचश्मा है। वह लोगों को ख़ैर की तरफ़ बुला रहा है। इसके बरअक्स शैतान बुराई (evil) का सरचश्मा है। वह लोगों को बुराई के रास्तों की तरफ़ बुलाता है। आदमी का इम्तिहान यह है कि वह शैतान के फ़रेब में न आए और शैतान को छोड़कर वह ख़ुदा की तरफ़ दौड़ पड़े।

मौजूदा दुनिया में हर आदमी इसी दोतरफ़ा तक़ाज़े के दरम्यान है। हर आदमी एक दाख़िली जंग के मोर्चे पर खड़ा हुआ है। एक तरफ़ उसका ज़मीर (conscience) है, जो उसे ख़ुदा की तरफ़ खींचता है। दूसरी तरफ़ उसकी अना (ego) है, जो उसे धकेलकर शैतान की तरफ़ ले जाना चाहती है— ज़मीर ख़ुदा का नुमाइंदा है और अनानियत शैतान की नुमाइंदा।

दाओी का काम यह है कि वह इंसान को इस हक़ीक़त से आगाह करे। वह इंसान के अंदर ज़हनी बेदारी (intellectual awareness) लाकर उसे इस क़ाबिल बनाए कि वह इस दोतरफ़ा तक़ाज़े को पहचाने। वह अपनी अनानियत पर रोक लगाए और ज़मीर की आवाज़ को तक़वीयत (strength) दे। वह शैतान की तर्ग़ीबात (incentives) से बचकर ख़ुदा के उस रास्ते का मुसाफ़िर बन जाए, जो उसे जन्नत की तरफ़ ले जाने वाला है— यह दावती काम ज़मीन पर होने वाले तमाम कामों में सबसे ज़्यादा अहम है। यह पैग़ंबरों वाला काम है। जो लोग इस काम के लिए उठें, उन्हें निहायत ख़ुसूसी इनामों से नवाज़ा जाएगा।

क़ुरआन की सूरह नं० 7 में अस्हाबे-आराफ़ का ज़िक्र है यानी बुलंदियों वाले। यह वे लोग हैं, जो क़यामत के दिन ऊँचे मिंबरों पर खड़े किए जाएँगे और अहले-जन्नत और अहले-दोज़ख़, दोनों के बारे में ख़ुदा के फ़ैसले का ऐलान करेंगे। इन आयात का तर्जुमा यह है—

"और आराफ़ के ऊपर कुछ लोग होंगे, जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकारकर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो। वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे, मगर वे उसके उम्मीदवार होंगे और जब दोज़ख़ वालों की तरफ़ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ! हमें शामिल न करना इन ज़ालिम लोगों के साथ और आराफ़ वाले उन लोगों को पुकारेंगे, जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने आपको बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं, जिनकी निस्बत तुम क़सम खाकर कहते थे कि कभी उन्हें अल्लाह की रहमत न पहुँचेगी। जन्नत में दाख़िल हो जाओ। अब न तुम पर कोई डर है और न

तुम ग़मगीन होंगे।” (क़ुरआन, 7:46-49)

इन आयात में अस्हाबे-आराफ़ से मुराद शुहदा हैं यानी ख़ुदा के वे ख़ास बंदे, जिन्होंने दुनिया में क़ौमों के ऊपर ख़ुदा के दीन की गवाही दी। फिर किसी ने माना और किसी ने इनकार किया।

(तफ़्सीर अल-क़ुर्तुबी, 7:211)

इन शुहदा के लिए क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ आए हैं, जैसे— मुंज़िर, मुबश्शिर, दाओ वग़ैरह। इस गिरोह में सबसे पहले अंबिया शामिल हैं और इसके बाद अल्लाह के वे ख़ास बंदे, जिन्होंने अंबिया के नमूने को लेकर अपने ज़माने के लोगों पर दावत और शहादत का काम अंजाम दिया।

लेकिन क़यामत में लोगों के अबदी अंजाम का जो फ़ैसला होने वाला है, वह उसी कार-ए-शहादत (दावत) की बुनियाद पर होगा, जो दुनिया में उनके ऊपर अंजाम दिया गया था। यह कार-ए-शहादत दुनिया ही में इंसानों को दो गिरोहों में बाँट रहा है। एक उसे क़बूल करने वाले और दूसरे उसका इनकार करने वाले। क़यामत में ये दूसरे

क़िस्म के लोग एक-दूसरे से अलग कर दिए जाएँगे और फिर दोनों के लिए उनके अमल के मुताबिक़ दो मुख़्तलिफ़ अंजाम का फ़ैसला किया जाएगा।

यह फ़ैसला हालाँकि पूरी तरह से ख़ुदा का फ़ैसला होगा, लेकिन इस फ़ैसले का ऐलान उन्हीं ख़ुसूसी बंदों के ज़रिये कराया जाएगा, जिन्होंने दुनिया में दावत और शहादत का काम अंजाम दिया था। यह उनके हक़ में एक ग़ैर-मामूली ऐज़ाज़ होगा। इस ऐलान के लिए क़यामत के मैदान में ऊँचे स्टेज बनाए जाएँगे, जिनके ऊपर ये अस्हाबे-आराफ़ खड़े होंगे। वहाँ से वे हर एक को देखेंगे और हर एक के बारे में ख़ुदाई फ़ैसले से उसे बाख़बर करेंगे।

शुहदा और दुआत (दाअियों) ने दुनिया में ख़ुदा के काम को अपना काम समझकर उसके लिए मेहनत की थी, इस अमल की बुनियाद पर उन्हें यह इम्तियाज़ी इनाम दिया जाएगा कि क़यामत में वे बुलंदियों पर खड़े हों और उस दावत-ए-हक़ के आख़िरी अंजाम से लोगों को बाख़बर करें। दुनिया में वे अपने मक़सद के ऐतबार से बुलंद थे और क़यामत में वे उसके अमली अंजाम के

ऐतबार से बुलंद क़रार दिए जाएँगे।

ख़ुदा पर ईमान लाने के बाद एक बंदे से अमली तौर पर जो कुछ मत्लूब है, उसे क़ुरआन में दो क़िस्म के अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है— इताअत-ए-ख़ुदा और नुसरत-ए-ख़ुदा। इताअत-ए-ख़ुदा से मुराद यह है कि बंदा उन तमाम अहकाम (do's and don'ts) पर अमल करे, जो ख़ुदा की तरफ़ से रसूल के ज़रिये बताए गए हैं। वे उन तमाम हुक्मों को अपनी ज़िंदगी में इख़्तियार करें, जिनको इख़्तियार करने की ख़ुदा ने ताकीद की है और उन तमाम चीज़ों से बचे, जिनसे बचने का ख़ुदा ने अपनी किताब में हुक्म दिया है या अपने रसूल के ज़रिये जिनका ऐलान फ़रमाया है।

नुसरत-ए-ख़ुदा का मतलब है ख़ुदा की मदद करना। यह एक अनोखा शर्फ़ है, जो किसी साहिब-ए-ईमान को मिलता है। इससे मुराद वही चीज़ है, जिसे क़ुरआन में दावत इलल्लाह कहा गया है। यह चूँकि ख़ुद ख़ुदा का एक मत्लूब अमल है, जो बंदे के ज़रिये अदा कराया जाता है, इसीलिए इसे नुसरत-ए-ख़ुदा (ख़ुदा की मदद) से ताबीर

किया गया है।

इबादत, अख़्लाक़ और मामलात में ख़ुदा के अह्काम की तामील बंदे की अपनी ज़रूरत है। इसके ज़रिये बंदा अपनी बंदगी को साबित करके ख़ुदा के इनाम का मुस्तहिक़ बनता है, मगर दावत इलल्लाह का मामला इससे मुख़्तलिफ़ है। क़ुरआन के मुताबिक़ यह अल्लाह के ऊपर से हुज्जत (4:165) को ख़तम करना है। इम्तिहान की मस्लिहत की बुनियाद पर यह काम इंसानों के ज़रिये कराया जाता है। यह एक ख़ुदाई अमल है, जिसे कुछ इंसान ख़ुदा की तरफ़ से अंजाम देते हैं और फिर ख़ुदा के यहाँ से इसका इनाम पाते हैं।

रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम बिला शुबहा सारी दुनिया के लिए ख़ुदा के पैग़ंबर हैं, मगर आप एक महदूद मुद्दत तक दुनिया में रहे, इसके बाद आपकी वफ़ात हो गई। रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद आपकी उम्मत आपके इस काम की ज़िम्मेदार है। अपनी ज़िंदगी में आपने बराहे-रास्त इस काम को अंजाम को दिया। आपके बाद यह काम बिल

वास्ता तौर पर आपकी उम्मत के ज़रिये अंजाम पाएगा। आपकी उम्मत की लाज़िमी ज़िम्मेदारी है कि वह नस्ल-दर-नस्ल हर ज़माने के लोगों के सामने उस दीन का पैग़ाम पहुँचाती रहे, जो दीन आप ख़ुदा की तरफ़ से लाए और जो क़यामत तक इसी हाल में महफ़ूज़ रहेगा।

इस मामले की मज़ीद तशरीह एक हदीस से होती है, जिसे मशहूर सीरतनिगार मुहम्मद बिन इस्हाक़ (वफ़ात 768 ईस्वी) ने नक़ल किया है। इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मसीह के दावती मिशन के बारे में भी फ़रमाया है और ख़ुद अपने बारे में भी। इस हदीस का तर्जुमा यह है—

"रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम सुलह हुदैबिया (623 ईस्वी) की अदायगी के बाद एक दिन अपने अस्हाब के सामने आए। अपने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! अल्लाह ने मुझे तमाम दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है, बस तुम इस मामले में मुझसे इख़्तिलाफ़ न करो, जैसा कि मसीह के हवारियों ने इख़्तिलाफ़ किया था। आपके अस्हाब ने कहा कि ऐ ख़ुदा के रसूल !

हवारियों ने किस तरह इख़्तिलाफ़ किया था। आपने फ़रमाया कि मसीह ने अपने हवारियों को उस काम की तरफ़ बुलाया, जिसकी तरफ़ मैंने तुम्हें बुलाया है, बस मसीह ने जिसे क़रीबी मुक़ाम पर जाने के लिए कहा, वह राज़ी रहा और तैयार हो गया और जिसे दूर के मुक़ाम पर जाने के लिए कहा, तो उसने नागवारी ज़ाहिर की और वह उस पर गराँ (भारी) गुज़रा। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अस्हाब को मुख़्तलिफ़ सरदारों और हाकिमों की तरफ़ अपनी दावत के साथ रवाना किया। इब्ने-इस्हाक़ कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम जब अपने अस्हाब के सामने आए और इस दावती काम की तरफ़ उन्हें तवज्जह दिलाई तो उनसे कहा कि अल्लाह ने मुझे सारे आलम के लिए रहमत बनाकर भेजा है, बस तुम मेरी तरफ़ से इस ज़िम्मेदारी को अदा करो। अल्लाह तुम्हारे ऊपर रहम फ़रमाए।" (सीरत इब्ने-हिशाम, 4:278)

ज़मीन के ऊपर और आसमान के नीचे किसी इंसान के लिए इससे बड़ा कोई ऐज़ाज़ नहीं कि वह एक ऐसे काम

के लिए सरगर्म हो, जो बराहे-रास्त तौर पर ख़ुद ख़ुदा का काम हो, जो गोया ख़ुदावंदे ज़ुल जलाल की मदद करना है। यह बिला शुबह एक ऐसा ऐजाज़ है, जिससे बड़ा कोई ऐजाज़ मुमकिन नहीं।

ख़ुदा क़ादिर-ए-मुतलक़ है। वह हर मालूम और नामालूम काम को अंजाम देने की मुकम्मल क़ुदरत रखता है। वह चाहे तो अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए पत्थरों को क़ुव्वते गोयाई दे दे, वह दरख़्त की हर पत्ती को ज़बान बना दे, जिससे वह ख़ुदा के पैग़ामों का ऐलान करने लगें, मगर यह ख़ुदा का तरीक़ा नहीं। ख़ुदा यह चाहता है कि इंसानों के दरमयान उसके पैग़ाम की पैग़ामरसानी ख़ुद इंसान ही अंजाम दे, ताकि इल्तिबास (6:9) का पर्दा बाक़ी रहे, ताकि इम्तिहान की मस्लिहत मजरूह न होने पाए।

इस सूरते-हाल ने इंसान के लिए अज़ीमतरीन अमल का दरवाज़ा खोल दिया है। जो लोग दावत के इस ख़ुदाई अमल के लिए उठें, उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में निहायत ख़ुसूसी मदद हासिल होती है और आख़िरत में उन्हें आलातरीन ऐज़ाज़ात से नवाज़ा जाएगा।

एक इंसान जब नमाज़ पढ़ता है तो वह समझता है कि वह ख़ुदा के आगे अपने इज्ज़ का इक़रार कर रहा है। इसके मुक़ाबले में जब वह दावत इलल्लाह का काम करता है तो उसका अहसास यह होता है कि वह ख़ुद ख़ुदा का एक काम अंजाम दे रहा है। किसी इंसान के लिए बिला शुबहा इससे ज़्यादा लज़ीज़ कोई तजुर्बा नहीं कि वह यह महसूस करे— मैं अपने रब के काम में मसरूफ़ हूँ, मैं अपने रब के एक मंसूबे की तक्मील कर रहा हूँ।

उम्मत की ज़िम्मेदारी

क़ुरआन की सूरह अल-अनआम में इरशाद हुआ है— "तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है? कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दरम्यान गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतरा है, ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार कर दूँ और वह भी जिसे यह (क़ुरआन) पहुँचे।" (6:19)

इस आयत में पैग़ंबर की ज़बान से यह कहा गया है, "मुझ पर क़ुरआन उतारा गया है, ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार करूँ और उसे, जिसे यह (क़ुरआन) पहुँचे।"

पैग़ंबरे-इस्लाम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ज़माने के लोगों तक बराहे-रास्त तौर पर ख़ुद अपनी कोशिश से क़ुरआन के पैग़ाम को पहुँचाया था। अब आपके बाद आपकी उम्मत आपकी नियाबत में पैग़ामरसानी का यह काम अंजाम देगी। हर दौर के अफ़राद-ए-उम्मत अपने ज़माने की इंसानी नस्लों के सामने क़ुरआन की तब्लीग़ का यह काम अंजाम देते रहेंगे, यहाँ तक कि क़यामत आ जाए।

इस सिलसिले में जो ज़िम्मेदारी पैग़ंबर की थी, ठीक वही ज़िम्मेदारी अब उम्मत पर आयद हो चुकी है। उम्मत को हर हाल में क़ुरआन का पैग़ाम तमाम इंसानों तक पहुँचाना है। इस मामले में उम्मत, ख़ास तौर पर उम्मत के उलमा को उस आख़िरी हद तक जाकर यह सबूत देना है कि वे आम इंसानों की हिदायत के हरीस बन गए हैं। उन्हें अपने आपको इस काम में इतना ज़्यादा शामिल करना है कि बज़ाहिर महसूस होने लगे कि शायद वे इस कोशिश में अपने आपको हलाक कर डालेंगे (18:6)।

तब्लीग़-ए-आम की यह ज़िम्मेदारी जो उम्मत-ए-

मुस्लिमा पर डाली गई है, इसकी हैसियत इख़्तियारी अमल की नहीं है कि चाहे उसे किया जाए या उसे छोड़ दिया जाए; यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है, जिसे हर हाल में अदा करना है। जिस तरह पैग़ंबर के लिए इस मामले में कोई उज़्र क़ाबिले-क़बूल न था, इसी तरह आपकी उम्मत के लिए भी इस मामले में कोई उज़्र क़ाबिले-क़बूल न होगा, यहाँ तक कि बज़ाहिर दूसरे दीनी आमाल भी उम्मत की निजात के लिए काफ़ी नहीं हो सकते, अगर वह दावत-ए-आम के इस फ़रीज़े को छोड़े हुए हो।

हज़ारों इंसान हर रोज़ मर रहे हैं। इस तरह वे इस मौक़े से महरूम हो रहे हैं कि उन्हें ख़ुदा की बात बताई जाए और इसे क़बूल करके ख़ुदा की पकड़ से बच सकें। ऐसी हालत में मुसलमानों का लाज़िमी फ़रीज़ा है कि वे हर उज़्र को छोड़कर दावत इलल्लाह की इस मुहिम के लिए उठ खड़े हों।

लाज़िमी फ़रीज़ा

क़ुरआन की सूरह अलमयीदा में इरशाद हुआ है— “ऐ पैग़ंबर ! जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है, उसे पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैग़ाम को नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यक़ीनन मुनकिर लोगों को राह नहीं देता।” (5:67)

अल्लाह तआला ने पैग़ंबर को जिस ख़ास मक़सद के तहत भेजा, वह यह था कि ख़ुदा से मिली हुई हिदायत को वे लोगों तक पहुँचा दें। यही पैग़ंबर का असल काम था। पैग़ंबर अगर यह काम न करे यानी जो पैग़ाम उसे दूसरों तक पहुँचाना है, वह उसे न पहुँचाए तो गोया कि उसने अपने मिशन की तक्मील न की।

ख़त्मे-नबूवत के बाद उम्मत-ए-मुहम्मदी मुक़ाम-ए-नबूवत पर है यानी उसे वही काम अंजाम देना है, जो पैग़ंबर ने अपने ज़माने में अंजाम दिया था। इससे मालूम हुआ कि ख़ुद पैग़ंबर की तरह उम्मत-ए-मुहम्मदी का

उम्मत-ए-मुहम्मदी होना पूरी तरह से इस बात पर निर्भर है कि वह पैग़ंबर की नियाबत में ख़ुदा के पैग़ाम की तब्लीग़ का काम करे। वह हर ज़माने के इंसानों तक ख़ुदा के दीन को उसकी असल सूरत में बिना मिलावट के पहुँचाती रहे। अगर उसने ऐसा न किया तो इस पर भी क़ुरआन की मज़्कूरा आयत के अल्फ़ाज़ सादिक़ आएँगे यानी वह ख़ुदा की नज़र में अपने उम्मत-ए-मुहम्मदी होने की हैसियत को खो देगी।

"और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा" इसका मतलब दूसरे अल्फ़ाज़ में यह है कि इस मामले में तुम्हें कभी भी उज़्र को उज़्र नहीं बनाना है। इस मामले में तुम्हारा हर उज़्र अल्लाह के यहाँ ग़ैर-मक़बूल है। तुम्हें सिर्फ़ यह करना है कि हर मुमकिन या ग़ैर-मुमकिन उज़्र को ख़ुदा के ख़ाने में डाल दो और दावत के अमल में अपने आपको लगा दो। इस मामले में दूसरा कोई भी रास्ता अहले-ईमान के लिए जायज़ नहीं।

दावत इलल्लाह का काम

मौजूदा ज़माना दावत इलल्लाह के काम के लिए इंतिहाई हद तक मुआफ़िक ज़माना है। आज हर जगह मज़हबी आज़ादी (religious freedom) का माहौल है। कम्युनिकेशन की सहूलियतें आला दर्जे में हासिल हैं। मुअस्सिर दावती लिटरेचर छपा हुआ मौजूद है। ऐसी हालत में किसी भी शख़्स के लिए कोई उज़्र (excuse) बाक़ी नहीं रहा। कोई भी औरत या मर्द यह कहकर नहीं छूट सकता कि वह दावत का काम करने की सलाहियत नहीं रखता था, इसलिए उसने दावत का काम नहीं किया।

आज दावत का काम करने के लिए इसकी ज़रूरत नहीं है कि आप अपने कामों को छोड़कर तमाम ज़रूरी उलूम का मुताला करें और फिर अपने अंदर आला इल्मी इस्तेदाद पैदा करने के बाद दावत का काम करें। आपकी तरफ़ से यह काम किया जा चुका है। आप अपनी ज़िंदगी के नक़्शे में कोई तब्दीली किए बग़ैर दावत के काम को अपनी ज़िंदगी का जुज़ बना सकते हैं और दावत की

ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी तौर पर अदा कर सकते हैं।

सीपीएस के तहत मुख़्तलिफ़ ज़बानों में ताक़तवर लिटरेचर छापा जा चुका है। आप इस लिटरेचर को हासिल करें। उसे हर जगह अपने साथ रखें और जब भी किसी शख़्स से आपकी मुलाक़ात हो तो आप उसे यह कहकर पेश कर दें—

"जनाब ! यह आपके लिए एक रूहानी तोहफ़ा है।"

Sir, this is a spiritual gift for you.

आप इस लिटरेचर को अपने ऑफ़िस में, अपनी दुकान में और अपने इदारे में नुमायाँ मुक़ाम पर रख दें। आने वाले लोग ख़ुद ही इसे ले लेंगे और शौक़ से इसका मुताला करेंगे। यह ज़माने का तक़ाज़ा है और हमें चाहिए कि हम इस तक़ाज़े को दावत इलल्लाह के काम के लिए भरपूर तौर पर इस्तेमाल करें।

दावत और अमल

आम तौर पर यह कहा जाता है कि "पहले मुसलमानों की इस्लाह करो, जब उनकी इस्लाह हो जाएगी तो लोग

उन्हें देखकर ख़ुद-ब-ख़ुद इस्लाम क़बूल कर लेंगे।" उसूली ऐतबार से यह बात दुरुस्त नहीं। हक़ीक़त यह है कि दावत अपने आपमें एक ज़िम्मेदारी है। दावत का काम हर हाल में करना है, जिस तरह नमाज़ हर हाल में पढ़ना है। कोई भी उज़्र दावती फ़रीज़े की अदायगी से बाहर रहने के लिए काफ़ी नहीं। इस तरह के लोग अगर अपने नज़रिये को दुरुस्त समझते हैं तो वे तारीकीन-ए-सलात से नमाज़ पढ़ने के लिए भी न कहें, वे यह करें कि वे ख़ुद नमाज़ पढ़ें और यह यक़ीन करें कि लोग उन्हें देखकर अपने आप नमाज़ पढ़ने लगेंगे।

यह एक बेबुनियाद मफ़रूज़ा है कि मुसलमान अगर दुरुस्त हो जाएँ तो ग़ैर-मुस्लिम सिर्फ़ उन्हें देखकर ही इस्लाम क़बूल कर लेंगे। इस बात का सबूत यह है कि दुनिया में एक लाख से ज़्यादा पैग़ंबर आए और यह पैग़ंबर मुसल्लमा तौर पर अख़्लाक़ के आला मेयार पर थे, मगर ऐसा नहीं हुआ कि पैग़ंबरों को देखकर लोग ख़ुदा के दीन को इख़्तियार कर लें। हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और दूसरे तमाम पैग़ंबरों का वह हाल हुआ, जिसे क़ुरआन

में इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है—

“अफ़सोस है बंदों पर, जब भी उनके पास कोई रसूल आया तो उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया।” (36:30)

असल यह है कि आदमी जब किसी को नेकी की तल्क़ीन करे तो संजीदगी का तक़ाज़ा है कि वह ख़ुद भी उस पर कारबंद हो, मगर इसका मतलब यह नहीं कि अमल, दावत की शर्त है। दावत का काम हर हाल में जारी रखा जाएगा, चाहे दाओी उस पर आमिल हो या न हो।

मुफ़स्सिर इब्ने-कसीर ने सूरह अल-बक़रह आयत नं० 44 के तहत लिखा है—

“मारूफ़ की तल्क़ीन करना और उस पर अमल करना, दोनों वाजिब हैं। इनमें से कोई एक-दूसरे के तर्क से साक़ित नहीं होता। उलेमा-ए-सलफ़ और उलेमा-ए-ख़लफ़ का सहीतरीन क़ौल यही है।

हक़ीक़त यह है कि आलिम मारूफ़ की तल्क़ीन करेगा, चाहे वह उस पर अमल न करता हो और वह मुनकर से रोकेगा, चाहे वह ख़ुद उसका मुर्तकिब हो। सईद इब्ने-जुबैर ताबिई ने दुरुस्त तौर पर कहा कि अगर ऐसा

होता कि आदमी सिर्फ़ उस वक़्त मारूफ़ की तल्क़ीन करे और मुनकर से रोके, जबकि उसके अंदर कोई मुनकर न पाया जा रहा हो तो किसी शख़्स ने भी मारूफ़ की तल्क़ीन न की होती और न वह मुनकर से रोकता।"

(तफ़्सीर इब्ने-कसीर, 1/85)

असल यह है कि दावत अहसास-ए-ज़िम्मेदारी के तहत ज़ाहिर होने वाला अमल है, न कि अहसास-ए-सालिहियत के तहत। मदऊ जब अपने दीन को छोड़कर इस्लाम को इख़्तियार करता है तो वह इस्लाम की अपनी सदाक़त की बुनियाद पर ऐसा करता है, न कि मुसलमानों को बाअमल देखकर। अगर दाओ के बाअमल होने को देखकर लोग हक़ को क़बूल करते तो अंबिया के गिर्द इंसानों की भीड़ दिखाई देती, मगर मालूम है कि आख़िरी पैग़ंबर के सिवा किसी भी पैग़ंबर के गिर्द इंसानों की कोई बड़ी जमाअत इकट्ठा नहीं हुई। आदाद-ओ-शुमार(statistics) के मुताबिक़ हर साल सिर्फ़ अमेरिका में तक़रीबन एक लाख ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम में दाख़िल होते हैं। अगर यह दुरुस्त है कि मुसलमानों को बाअमल

देखकर लोग इस्लाम में दाख़िल होते हैं तो क्या मौजूदा ज़माने में अमेरिका और दूसरे मुक़ामात पर रहने वाले मुसलमान ऐसे ही बाअमल हैं, जिन्हें सिर्फ़ देखकर ग़ैर-मुस्लिमों की इतनी बड़ी तादाद इस्लाम में दाख़िल हो जाए।

असल यह है कि दावत हर हाल में और हर शख़्स को देना है। दावत के लिए अमल की शर्त नहीं लगाई जा सकती। बैहक़ी और इब्ने-असाकर ने जाबिर इब्ने-अब्दुल्लाह से रिवायत किया है कि हज़रत हुज़ैफ़ा ने हमसे कहा कि हम इस इल्म (दीन-ए-हक़) के हामिल बनाए गए थे, इसे हम तुम्हें दे रहे हैं, हालाँकि हम ख़ुद इस पर अमल न कर सके। (हयातुस्साहबा, 3:268)

हर घर दावती मरकज़

हज़रत मूसा का ज़माना पंद्रहवीं सदी क़ब्ल मसीह का ज़माना है यानी अब से तक़रीबन साढ़े तीन हज़ार साल पहले का ज़माना। वे क़दीम मिस्र में पैग़ंबर बनाए गए। उस वक़्त मिस्र में बनी इस्राईल चंद लाख की तादाद में आबाद थे। वे गोया उस ज़माने के अहले-ईमान थे। उस वक़्त बनी इस्राईल

को एक हुक्म दिया गया, जो क़ुरआन में इन अल्फ़ाज़ में आया है— "तुम अपने घरों को क़िब्ला बना लो।"

क़िब्ला उस मरकज़ी जगह को कहते हैं, जिसकी तरफ़ तवज्जह की जाए, जो लोगों के लिए फ़ोकस ऑफ़ अटेंशन (focus of attention) या सेंटर ऑफ़ अटेंशन (centre of attention) की हैसियत रखता हो। उस वक़्त के हालात में इसका मतलब यह था कि अपने घरों को अपने लिए दावती और तरबियती अमल का मरकज़ बना लो। यह एक तदबीर थी और यह तदबीर हर ज़माने में और हर मुक़ाम पर मत्लूब है। मौजूदा ज़माने में भी हमें दावती अमल को मुस्तहकम करने के लिए यही काम करना है।

मौजूदा ज़माने में इसकी बेहतरीन सूरत यह है कि हर शख़्स अपने-अपने मुक़ाम पर लाइब्रेरी के नाम से एक जगह बनाए, चाहे अपने घर के अंदर या अपने घर के बाहर; यहाँ तक कि अगर किसी के पास एक कमरे का घर हो, तब भी वह उसके एक हिस्से में किताबों की अलमारी खड़ी करके उसे लाइब्रेरी की सूरत दे सकता है।

यह लाइब्रेरी अमलन दावत और तरबियत का एक मरकज़ होगी। ज़रूरत है कि इस तरह के मराकिज़-ए-दावत हर जगह क़ायम किए जाएँ।

हिजरत बराए-दावत

मौजूदा ज़माने में जब सनअती तरक़्क़ी (industrial development) हुई तो मुस्लिम मुल्कों के बहुत से लोग अपने वतन से हिजरत करके तरक़्क़ीयाफ़्ता मुल्कों में गए। ऐसे मुहाजिर मुसलमानों की मजमूई तादाद तक़रीबन 15 मिलियन है। पैग़ंबरे-इस्लाम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर अपने अस्हाब से कहा था कि अल्लाह ने मुझे तमाम इंसानों के लिए भेजा, इसलिए तुम मेरे पैग़ाम को तमाम लोगों तक पहुँचा दो। इसके बाद अस्हाबे-रसूल की बड़ी तादाद अरब से निकलकर मुख़्तलिफ़ मुल्कों में फैल गई।

हदीस में आया है कि जिस आदमी की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए तरफ़ हो तो वह अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत क़रार पाएगी

और जिस आदमी की हिजरत दुनिया हासिल करने के लिए हो तो उसकी हिजरत उसी तरफ़ होगी, जिस तरफ़ उसने हिजरत की। (सही मुस्लिम, हदीस नं० 1907)

इस हदीस-ए-रसूल की रोशनी में सहाबा की हिजरत दावत इलल्लाह के लिए थी। इसलिए उन्हें दावत इलल्लाह का सवाब मिलेगा। दूसरे लफ़्ज़ों में, अस्हाबे-रसूल देने वाले (giver) बनकर बाहर गए थे। मौजूदा ज़माने के मुसलमान लेने वाले (taker) बनकर बाहर के मुल्कों में गए हैं। अब अगर ये हिजरत करने वाले मुसलमान अस्हाबे-रसूल वाला इनाम अल्लाह के यहाँ पाना चाहते हैं तो उन्हें अपनी हिजरत को इस्लामी बनाना होगा यानी वे उन मुल्कों में दाओ बनकर रहें। वे वहाँ के लोगों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाएँ।

क़ुरआन किताब-ए-दावत

क़ुरआन एक किताब-ए-दावत है। सातवीं सदी ईस्वी के रूबे-अव्वल में जब क़ुरआन उतरा तो उस वक़्त क़ुरआन ही दावत का सबसे बड़ा ज़रिया था। रसूल और

अस्हाबे-रसूल के तरीक़ा-ए-तब्लीग़ के मुताल्लिक़ रिवायात में आता है— "उन्होंने लोगों के सामने इस्लाम पेश किया और क़ुरआन का कुछ हिस्सा उन्हें पढ़कर सुनाया।"

अंग्रेज़ी ज़बान मौजूदा ज़माने में इंटरनेशनल ज़बान समझी जाती है। अंग्रेज़ी ज़बान में क़ुरआन के तक़रीबन 50 तर्जुमे मौजूद हैं, मगर क़ौमी ज़हन की बुनियाद पर यह अंग्रेज़ी तर्जुमे मदऊ फ्रेंडली ज़बान (mad'u friendly language) में तैयार न हो सके। इसी ज़रूरत की तक्मील के लिए लंबी कोशिश के बाद सीपीएस (नई दिल्ली) में 2008 में अंग्रेज़ी ज़बान का एक नया तर्जुमा-ए-क़ुरआन शाया किया है। यह तर्जुमा मदऊ फ्रेंडली ज़बान में तैयार किया गया है। चुनांचे जिन ग़ैर-मुस्लिम हज़रात तक यह तर्जुमा पहुँचता है, वे इसे शौक़ से लेते हैं और दिलचस्पी के साथ उसे पढ़ते हैं। वाशिंगटन (अमेरिका) के एक इदारा— Pew Forum on Religion and Public Life के एक हालिया सर्वे में बताया गया है कि इस वक़्त दुनिया की आबादी में मुसलमानों की तादाद डेढ़

बिलियन से ज़्यादा है। इसका मतलब यह है कि— मौजूदा इंसानी आबादी में हर चार में से एक शख़्स मुसलमान है— World over, 1 in 4 persons is a Muslim.

इसका मतलब यह है कि हर मुसलमान अगर यह फ़ैसला करे कि वह कम-से-कम चार ग़ैर-मुस्लिमों तक क़ुरआन पहुँचाएगा तो निहायत महदूद मुद्दत में क़ुरआन दुनिया के तमाम मर्दों और औरतों तक पहुँच जाएगा।

वाज़ेह हो कि दावत का मक़सद कन्वर्ज़न (conversion) नहीं है। दावत का मक़सद इंज़ार-ओ-तबशीर (19:97) है और क़ुरआन पहुँचाने के बाद यह काम बिला शुबहा उसूली तौर पर अंजाम पा जाता है। दाओ का काम ख़ुदा के पैग़ाम को पुरअम्न अंदाज़ में मदऊ तक पहुँचा देना है। इसके बाद यह मदऊ की ज़िम्मेदारी है कि वह उसके बारे में क्या रिस्पॉन्स देता है।

हदीस में बताया गया है कि क़यामत के क़रीब हर घर में इस्लाम का कलिमा पहुँच जाएगा। इस हदीस में कलिमा-ए-इस्लाम से मुराद ख़ुदा की किताब क़ुरआन है। अब हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह इदख़ाल-ए-कलिमा के इस

अमल में अपना हिस्सा अदा करे— यह दावत-ए-इस्लाम का एक ऐसा तरीक़ा है, जो बिला शुबहा हर मुसलमान के लिए मुमकिन है, चाहे वह तालीमयाफ़्ता हो या ग़ैर-तालीमयाफ़्ता।

मस्जिदवार दावत

एक सय्याह (tourist) ने लिखा है कि मैंने दुनियाभर में मुख़्तलिफ़ मुल्कों का सफ़र किया। मैंने पाया कि दूसरी क़ौमों के लोग जहाँ-जहाँ गए, वहाँ उन्होंने बड़े-बड़े क़िले बनाए, लेकिन मुसलमान जब अरब से निकलकर दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में दाख़िल हुए तो उन्होंने हर जगह मस्जिदें बनाईं। ये मस्जिदें गोया कि इस्लाम के मराकिज़ हैं। इस्लाम की हैसियत एक ग़ैर-सियासी एम्पायर (empire) की है और ये मस्जिदें गोया कि आलमी सतह पर क़ायम इस ग़ैर-सियासी एंपायर की शाख़ें हैं, जो सारी दुनिया में तक़रीबन हर शहर और हर बस्ती में मौजूद हैं।

ये मस्जिदें एक ऐतबार से इस्लाम की इबादतगाहें हैं, दूसरे ऐतबार से ये मस्जिदें इस्लाम के दावती मराकिज़ हैं। इन मस्जिदों के ज़रिये जिस तरह आलमी सतह पर नमाज़

का निज़ाम क़ायम है, इसी तरह इन मस्जिदों के ज़रिये इस्लाम की आलमी दावत को मुनज़्ज़म किया जा सकता है। ख़ास तौर पर जुमा और ईद का दिन इस मक़सद के लिए बहुत ज़्यादा मुनासिब है। इन दिनों में मुसलमान बड़ी तादाद में मस्जिदों में इकट्ठा होते हैं। इसी के साथ आलमी सय्याह भी अपने सफ़र के दौरान मुख़्तलिफ़ तारीख़ी मस्जिदों में बराबर आते रहते हैं। इन लोगों के ज़रिये इस्लाम की दावत तेज़ी से आलमी सतह पर फैल सकती है।

दावत अहले-ईमान पर उसी तरह फ़र्ज़ है, जिस तरह नमाज़ उन पर फ़र्ज़ है (2:143)। मस्जिद, दावत और इबादत दोनों फ़राइज़ की अदायगी के लिए फ़ितरी मरकज़ की हैसियत रखती है।

इस मक़सद के लिए सीपीएस इंटरनेशनल (CPS International) ने क़ुरान के तर्जुमे और दावती लिटरेचर दुनिया की मुख़तलिफ ज़बानों, हिंदी, उर्दू वगेराह में बड़ी तादाद में ख़ूबसूरत अंदाज़ में छपवाए हैं। इनमें इस्लाम की तालीमात को सादा और असरी उस्लूब में बयान किया गया है। मस्जिदों के इमाम इस दावती मुहिम में निहायत

आसानी के साथ शरीक हो सकते हैं। वे इस लिटरेचर को मँगवाकर अपने यहाँ रखें और लोगों के दरम्यान उनको तक़्सीम करें।

इस तरह मस्जिदों के इमाम एक ही वक़्त में दो काम कर सकते हैं— नमाज़ की इमामत और दावत-ए-इस्लामी की इशाअत।

दावत और दुआ

दावत का एक अहम फार्मूला यह है— जहाँ दावत के मौक़े हों, वहाँ दावा वर्क (dawah work) और जहाँ बज़ाहिर दावत के मौक़े दिखाई न दें, वहाँ दुआ वर्क (dua work)।

दुआ का ताल्लुक़ जिस तरह दूसरी तमाम चीज़ों से है, उसी तरह इसका ताल्लुक़ दावत से भी है। हक़ीक़त यह है कि दुआ दावत के लिए लाज़िमी जुज़ की हैसियत रखती है। दुआ के बग़ैर दावत का काम मुअस्सिर तौर पर अंजाम नहीं दिया जा सकता। दुआ एक दाओी का सबसे बड़ा सरमाया है।

दाओी अपने मदऊ का बहुत ज़्यादा ख़ैरख़्वाह होता है। ख़ैरख़्वाही का यह जज़्बा उसे मजबूर करता है कि वह अपने मदऊ के हक़ में बराबर दुआ करता रहे। दावत को क़बूल करना हमेशा अल्लाह की तौफ़ीक़ से होता है। अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से किसी इंसान का दिल हक़ को क़बूल करने के लिए खुलता है। अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से किसी की कंडीशनिंग टूटती है। अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से यह होता है कि कोई शख़्स दावत पर संजीदगी से ग़ौर करे। यह तमाम चीज़ें तक़ाज़ा करती हैं कि दाओी हमेशा अपने मदऊ के लिए अल्लाह से दुआ करता रहे।

नतीजाख़ेज़ अमल

मेरे तजुर्बे के मुताबिक़ सिर्फ़ वही कोशिशें दुरुस्त हैं, जो नतीजाख़ेज़ हों। बाइबल में कहा गया है—

"तुमने बहुत-सा बोया, पर थोड़ा काटा।"

You have sown much and bring in little.

(Haggai, 1:6)

इससे यह हक़ीक़त मालूम होती है कि लोग आम तौर

पर बहुत ज़्यादा काम करते हैं, लेकिन वे सिर्फ़ उसका थोड़ा नतीजा हासिल कर पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि लोग आम तौर पर अपने अमल के नतीजे को सामने नहीं रखते। मैं आप तमाम लोगों से कहूँगा कि हमेशा अपने अमल के नतीजे को सामने रखकर काम करें और सिर्फ़ वही काम करें, जिसके बारे में आपको मालूम हो कि वह नतीजाख़ेज़ काम है।

इख़्वाने-रसूल का रोल

पैग़ंबरे-इस्लाम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस है, जिसमें आपने अपने 'इख़्वान' का ज़िक्र फ़रमाया है। इस हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं—

"यानी मेरी ख़्वाहिश है कि हम अपने इख़्वान को देखें। सहाबा ने कहा कि ऐ ख़ुदा के रसूल ! क्या हम आपके इख़्वान नहीं हैं? आपने फ़रमाया कि तुम मेरे अस्हाब हो और हमारे इख़्वान वे हैं, जो अभी नहीं आए।"

(सही-मुस्लिम, हदीस नंबर 367)

मज़्कूरा हदीस में पैग़ंबरे-इस्लाम ने अपने जिन

इख़्वान के मुताल्लिक़ बताया है, उनसे मुराद वे अहले-ईमान हैं, जो मारिफ़त की सतह पर रसूल को पहचानेंगे और बाद के ज़माने में वे दावती मक़सद के लिए उठेंगे, ताकि सारे इंसानों को ख़ुदा का अबदी पैग़ाम पहुँचा दें। इख़्वाने-रसूल मारूफ़ मायनों में कोई टाइटल नहीं, बल्कि वह एक ज़िम्मेदारी है।

इख़्वाने-रसूल का लफ़्ज़ तक़रीबन हज़ार साल से पुरअसरार बना हुआ है। तारीख़ के किसी दौर में मुतैय्यन तौर पर यह मालूम न हो सका कि इख़्वाने-रसूल कौन लोग होंगे और मुस्तक़बिल में उनका रोल क्या होगा।

इस हदीस से वाज़ेह तौर पर यह मालूम होता है कि माबादे-साइंस दौर (post-scientific era) में दावत इलल्लाह का पैग़ंबराना रोल अदा करना अभी बाक़ी है, यानी आज की ज़बान में ख़ुदाई सच्चाई को उसकी ख़ालिस और बेआमेज़ सूरत में इंसानों के सामने पेश करना। माबादे-साइंस दौर में उठने वाली दावती टीम इख़्वाने-रसूल के इस टाइटल के लिए यक़ीनी तौर पर एक उम्मीदवार ग्रुप की हैसियत रखती है। आपमें से हर औरत

और हर मर्द के लिए ज़रूरी है कि वह इस इमकान को वाक़या बनाए।

इस इमकान को वाक़या बनाना इस तरह मुमकिन है कि सबसे पहले आप ख़ुद इस्लाम की मारिफ़त हासिल करें। उसके बाद आप क़ुरआन के अंग्रेज़ी तर्जुमे की इशाअत और अल- रिसाला की मतबूआ किताबों को दूसरे इंसानों तक पहुँचाने का काम करें।

इसके लिए ज़रूरी है कि आपके अंदर सारे इंसानों की ख़ैरख़्वाही की स्प्रिट मौजूद हो। आप तमाम इंसानों के हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाह बनकर उठें। आपके दिल में हर एक के लिए मुहब्बत और हमदर्दी हो। आपका टारगेट क्या हो, इसे एक हदीस में इन अल्फ़ाज़ में बताया गया है—

"यानी ज़मीन की सतह पर कोई घर और कोई ख़ेमा ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा, जिसमें अल्लाह तआला इस्लाम का कलिमा दाख़िल न फ़रमा दें।"

(मुसनद अहमद, हदीस नं० 23,183)

यह कोई पुरअसरार बात नहीं, यह इमकानात-ए-दावत का इज़हार है। यह उस दौर की पेशीनगोई है कि

जब ज़रा-ए-इबलाग़ (means of communication) का ज़ाहिरा सामने आएगा और उसे इस्तेमाल करके हर इंसान तक कलिमा-ए-इस्लाम को पहुँचाना मुमकिन हो जाएगा। यह काम सिर्फ़ इस तरह मुमकिन है कि हम दावत इलल्लाह को अपना अव्वल कंसर्न (primary concern) बनाकर दूसरी तमाम चीज़ों को अपनी ज़िंदगी में सानवी (secondary) हैसियत दे दें।

इख़्तिलाफ़ को उज़्र बनाना

दावती मिशन के लिए इत्तिहाद बहुत ज़रूरी है। इत्तिहाद का मतलब है— इख़्तिलाफ़ के बावजूद मुत्तहिद रहना। आपको हमेशा यह याद रखना चाहिए—

"इत्तिहाद हमारी ताक़त है और इख़्तिलाफ़ हमारी कमज़ोरी।"

'United we stand, divided we fall'

आप इस हदीस-ए-रसूल को अपने ज़हन में हमेशा ताज़ा रखें—

"यानी जो शख़्स इज्तिमाइयत से अलग हुआ, वह

आग में जाएगा।”

(मुसतदरक अल-हाकिम, हदीस नं०, 391)

यह हदीस बहुत अहम है। इस हदीस में इख़्तिलाफ़ से मुराद नफ़्सियात-ए-इख़्तिलाफ़ है, न कि गिरोही इख़्तिलाफ़ यानी असल बुराई अमलन किसी गिरोह से कटना नहीं है, बल्कि इख़्तिलाफ़ बरपा करके इत्तिहाद को टुकड़े टुकड़े करना है। इसलिए आपको यह समझना होगा कि आप कभी इख़्तिलाफ़ात को उज़्र (excuse) बनाकर दावती मिशन से अलग न हों। ख़ुदा इस मामले में आपके किसी भी उज़्र को क़बूल नहीं करेगा।

राय की क़ुर्बानी

कोई आदमी जब एक राय क़ायम करता है तो वह समझने लगता है कि उसी की राय दुरुस्त है। ऐसा सिर्फ़ उसकी अपनी कंडीशनिंग की वजह से होता है। इसीलिए बजा तौर पर कहा गया है कि किसी आदमी के लिए सबसे बड़ी क़ुर्बानी अपनी राय की क़ुर्बानी है। इसलिए आपको अपनी राय की क़ुर्बानी देनी होगी। यह बिला

शुबहा सबसे बड़ी क़ुर्बानी है। यही वह क़ुर्बानी है, जिसकी क़ीमत पर आप मुत्तहिद होकर अपना दावती फ़रीज़ा अदा कर सकते हैं।

हिंदुस्तान में इस्लाम की दावत

एक हदीस-ए-रसूल में हमें यह पेशीनगोई मिलती है—

“बाद के ज़माने में दावत इलल्लाह का काम करने के लिए हिंदुस्तान में एक मख़्सूस गिरोह (इसाबा) उठेगा।”

(अन-नसाई, हदीस नं० 3,175)

यह मख़्सूस दावती गिरोह इंडिया में भी दावत इलल्लाह का काम उसी तरह करेगा, जिस तरह वह आलमी सतह पर दावत इलल्लाह के काम अंजाम देगा और लोगों को जन्नत का रास्ता दिखाएगा।

बज़ाहिर ऐसा महसूस होता है कि ख़ुदा की तरफ़ से इस बात का फ़ैसला हो चुका है कि हिंदुस्तान में दावत इलल्लाह का काम इस तरह मुनज़्ज़म हो कि उसके ज़रिये लोग ख़ुदा की अबदी रहमत के साये में आ सकें। मज़्कूरा

हदीस में बताया गया है कि हिंदुस्तान में उठने वाला यह दावती गिरोह अज़ाब-ए-जहन्नम से महफ़ूज़ रहेगा, जन्नत के दरवाज़े उनके लिए खोल दिए जाएँगे और ये लोग ख़ुदा की अबदी जन्नत में जगह पाएँगे। इसलिए आपको इस दावती काम में पूरे यक़ीन के साथ भरपूर तौर पर शामिल हो जाना है।

हर औरत और मर्द को चाहिए कि वह अपने आपको इस दावती गिरोह का नाक़ाबिल-ए-तक़्सीम हिस्सा बनाए। अगर आपने अपनी दावती ज़िम्मेदारियों को पूरा किया तो ख़ुदा ज़रूर आपको उस दावती गिरोह में शामिल फ़रमाएगा, जिसके लिए उसकी तरफ़ से पैग़ंबरे-इस्लाम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिये पेशगी तौर पर बशारत दे दी गई है।

•••

ख़ुदा के अबदी पैग़ाम को तमाम इंसानों तक पहुँचाने के लिए दर्ज-ए-ज़ैल वेबसाइट्स तैयार कर ली गई हैं—

www.cpsglobal.org
www.goodwordbooks.com

आप ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को इन वेबसाइट्स से आगाह करें। मज़्कूरा वसाइल-ए-इब्लाग़ को इस्तेमाल करते हुए आपको मुत्तहिद होकर ख़ुदा का पैग़ाम हिंदुस्तान में और फिर सारी दुनिया के इंसानों तक पहुँचाना है।

मज़ीद यह कि आप लोगों को बताएँ कि वे दिल्ली में होने वाला हमारा हफ़्तेवर लेक्चर पाबंदी के साथ सुनें, जो कि हर संडे की सुबह को इंडियन टाइम के ऐतबार से 10:30 बजे शुरू होता है और डेढ़ घंटे तक जारी रहता है। सीपीएस की वेबसाइट्स (www.cpsglobal.org) पर हर इतवार को यह लेक्चर सुना जा सकता है और ऑनलाइन सवाल भी किए जा सकते हैं और पिछले लेक्चर्स भी सीपीएस की इस वेबसाइट पर मौजूद हैं।

क़ुरान मिशन में हिस्सा लेने के लिए :

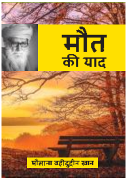
Centre for Peace and Spirituality International
Tel. +9111-41431165
info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Goodword Books
1, Nizamuddin West Market,
New Delhi-110013
Tel. +9111-41827083,
‘Mob. +91-8588822672
email: info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

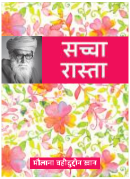
शांति और आध्यात्मिकता पर और किताबें।



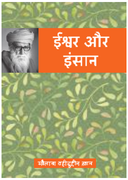
₹30/-



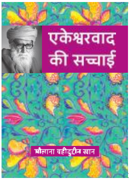
₹40/-



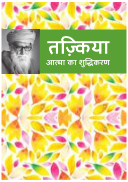
₹20/-



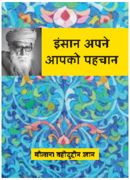
₹40/-



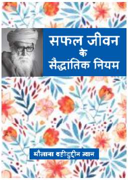
₹30/-



₹45/-



₹20/-



₹40/-

आध्यात्मिक सेट पवित्र कुरआन सहित केवल ₹160

Goodword Books
1, Nizamuddin West Market
New Delhi-110013
Call: +91120-4504638, +9111-8588822672
sales@goodwordbooks.com
Buy online at www.goodwordbooks.com

उम्मत के लिए दावती अमल के तीन दर्जे हैं। उम्मत के हर आदमी को अपनी सलाहियत के ऐतबार से इनमें से किसी दर्जे में अपने दाओ होने की हैसियत को साबितशुदा बनाना है। जो लोग इस अमल में शामिल न हों, उनके दूसरे आमाल ख़ुदा की नज़र में बेक़ीमत हो जाएँगे। इस मामले में ख़ुदा का जो मेयार है, वह पैग़ंबर और पैग़ंबर की उम्मत, दोनों के लिए बराबर है।

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com